

---

# Upadeshatmakam Patram

---

## उपदेशात्मकं पत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Upadeshatmakam Patram 2

File name : upadeshAtmakaMpatram2.itx

Category : misc, shrIdharasvAmI, advice

Location : doc\_z\_misc\_general

Author : Shridharasvami

Proofread by : Manish Gavkar

Description/comments : shrIdharasvAmI stotraratnamAlikA

Latest update : February 11, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



उपदेशात्मकं पत्रम्



(अनुष्टुप्छन्दः)

यतस्त्वयि न वृत्तिर्हि निर्विकल्पे चिदात्मनि ।  
नाहं न त्वं जगन्नेदं सोऽहं भावैस्तवास्ति किम् ॥ १ ॥

दासोऽहमिति चाज्ञानं तथा नोऽहमिति भ्रमम् ।  
अहं स इति सम्मोहं त्यक्त्वा स्वस्थो भवानघ ॥ २ ॥

निर्भेदं निर्मले नित्ये ब्रह्मरूपे निजात्मके ।  
ब्रह्मैवाऽहं तथा सोऽहं दासोऽहं मन्यसे कथम् ॥ ३ ॥

अखण्डैकरसे नित्ये निराधारे निरञ्जने ।  
यतः सदा स्थितोऽसि त्वं नेह नानास्ति किञ्चन ॥ ४ ॥


कर्तव्यो धर्म इत्याहुः स धर्म स्वात्मना स्थितिः ।  
इत्येवमेव जानीयान्नेहना नास्ति किञ्चन ॥ ५ ॥

मिथ्यैष व्यवसायस्ते यदिदं पत्रलेखनम् ।  
अनन्ते परमे व्योम्नि तिष्ठ त्वं स्वविचारतः ॥ ६ ॥


न कोऽपि गुरुरस्त्यत्र कनीयान् शिष्य एव वा ।  
आत्मैवेदं श्रुतिर्वक्ति द्वितीयाद्वै भयं यतः ॥ ७ ॥

इति श्रीमत परमहंसपरिव्राजकाचार्य सद्गुरु भगवान्  
श्रीधरस्वामीमहाराजविरचितं उपदेशात्मकं पत्रं सम्पूर्णम् ।  
रचनास्थानं - सज्जनगिरि, संवत्सरः - १९३६

Proofread by Manish Gavkar

——  
*Upadeshatmakam Patram*

pdf was typeset on February 12, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

